दर्पण

सुनील शर्मा,
राजेंद्र नगर इंदौर
+91 99260 20094

प्रतिकूलता

जीवन में हर समय परिस्थितियां हमारे अनुकूल रहें, यह संभव नहीं है। जीवन का स्वभाव ही परिवर्तनशील है, इसलिए कभी अनुकूलता मिलती है तो कभी प्रतिकूलता। किंतु यदि गहराई से विचार करें, तो प्रतिकूल परिस्थितियां हमें जीवन की सबसे महत्वपूर्ण सीख देती हैं। अनुकूल परिस्थितियों में आगे बढ़ना अपेक्षाकृत सरल होता है, क्योंकि वहां संघर्ष कम होता है, लेकिन जब परिस्थितियां विपरीत होती हैं, तब व्यक्ति के धैर्य, साहस, आत्मविश्वास और संकल्प की वास्तविक परीक्षा होती है। यही कारण है कि प्रतिकूलता केवल चुनौती नहीं होती, बल्कि व्यक्तित्व को निखारने का एक महत्वपूर्ण अवसर भी होती है। खेल के मैदान में भी यही सिद्धांत दिखाई देता है। जब परिस्थितियां सामान्य होती हैं, तब अच्छा प्रदर्शन करना अपेक्षाकृत सरल होता है, किंतु जो खिलाड़ी कठिन परिस्थितियों में भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता है, उसी की प्रशंसा होती है। यदि क्रिकेट का उदाहरण लें, तो जब अधिकांश बल्लेबाज कम रन बनाकर लौट जाते हैं, तब जो बल्लेबाज विपरीत परिस्थितियों में धैर्यपूर्वक खेलते हुए अपनी टीम के लिए महत्वपूर्ण रन बनाता है, वही सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी माना जाता है। उसकी सफलता केवल उसके रनों के कारण नहीं होती, बल्कि इसलिए होती है कि उसने कठिन परिस्थितियों में भी अपने आत्मविश्वास और संयम को बनाए रखा। धीरे-धीरे वही खिलाड़ी अपनी निरंतरता और संघर्षशीलता के कारण महान बल्लेबाज के रूप में स्थापित हो जाता है। हमारा जीवन भी इसी प्रकार है। जो व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों से भागने के बजाय उनका सामना करता है, वही अपने व्यक्तित्व को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाता है। कठिनाइयां हमें रोकने के लिए नहीं, बल्कि हमारी क्षमता को पहचानने और उसे विकसित करने के लिए आती हैं। इसलिए प्रत्येक चुनौती को सीखने और स्वयं को बेहतर बनाने के अवसर के रूप में स्वीकार करना चाहिए। जितना बड़ा संघर्ष होगा, उपलब्धि का मूल्य भी उतना ही अधिक होगा और सफलता भी उतनी ही प्रेरणादायक बनेगी। विशेष: प्रतिकूल परिस्थितियां जीवन में हमें पराजित करने नहीं, बल्कि हमें अधिक मजबूत, धैर्यवान और आत्मविश्वासी बनाने के लिए आती हैं। इसलिए उनका हृदय से स्वागत करें। जितनी अधिक चुनौतियों का हम साहसपूर्वक सामना करेंगे, उतना ही हमारा व्यक्तित्व निखरेगा और हमारी उपलब्धियां भी उतनी ही श्रेष्ठ एवं प्रेरणादायक होंगी।

संस्मरण

बचपन की अनेक स्मृतियाँ आज भी मन के किसी कोने में सजीव हैं। मेरी कई मुस्लिम सहेलियाँ थीं। वे विद्यालय आते समय हिजाब पहनकर आतीं और कक्षा में प्रवेश करते ही उसे बड़े करीने से उतारकर अपने बैग में रख देतीं। विद्यालय से घर लौटते समय पुनः हिजाब पहन लेतीं। उनकी इस सहज अनुशासनप्रियता और अपनी परंपरा के प्रति सम्मान को देखकर मन में आदर का भाव जागता था।समय बीता। जब मैं शिक्षिका बनी, तब भी अनेक मुस्लिम छात्राओं में अपनी संस्कृति के प्रति वही आत्मीय लगाव देखा। तब मन में यह विचार और दृढ़ हुआ कि अपनी परंपराओं का सम्मान करना प्रत्येक व्यक्ति की पहचान और आत्मगौरव का आधार होता है।मेरे अपने घर का वातावरण भी भारतीय संस्कारों से ओतप्रोत था। बचपन में हमें पारंपरिक वेशभूषा पहनने की प्रेरणा दी जाती थी। तेरह वर्ष की आयु तक लहँगा-चोली अथवा ऐसे वस्त्र, जो शालीनता का परिचय दें, पहनना आवश्यक था। बड़े होने पर साड़ी धारण करना हमारे परिवार की परंपरा थी।मेरे पिताजी विद्यालय के प्रधानाचार्य थे। तिलक, काली टोपी, धोती-कुर्ता और ऊपर गहरे रंग का कोट—यह उनका व्यक्तित्व था। विद्यालय से लौटते ही वे बड़े अनुशासन से अपने वस्त्र यथास्थान रखते। उनके जीवन का प्रत्येक व्यवहार हमें सादगी, अनुशासन और भारतीय जीवन-मूल्यों का पाठ पढ़ाता था।जब भी भारतीय संस्कृति की गरिमा की बात होती है, स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर जी का स्मरण सहज ही हो आता है। अपनी सादगी, दो चोटियाँ, माथे की बिंदी, साड़ी और विनम्र व्यक्तित्व के साथ उन्होंने विश्वभर में भारतीय संस्कृति की गरिमा को सम्मान दिलाया। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि प्रतिभा और संस्कार साथ-साथ चल सकते हैं।हमारे घर में प्रतिदिन प्रातः स्मरण के श्लोक, संध्या के समय रामरक्षा स्तोत्र का पाठ, दीप प्रज्वलित करना तथा घर के सभी बड़ों को प्रणाम करना जीवन का स्वाभाविक नियम था। आज जब इन परंपराओं से नई पीढ़ी का जुड़ाव कम होता दिखाई देता है, तब मन में एक कसक अवश्य उठती है। आधुनिकता आवश्यक है, परंतु यदि उसके साथ अपने संस्कार भी जुड़े रहें तो व्यक्तित्व और अधिक समृद्ध बनता है।आज की बदलती जीवनशैली में पहनावा, भाषा और रहन-सहन तेजी से बदल रहे हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, किंतु अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहना भी उतना ही आवश्यक है। किसी भी संस्कृति का सम्मान करना और अपनी संस्कृति पर गर्व करना—दोनों साथ-साथ संभव हैं। यही भारतीयता का वास्तविक स्वरूप है।मुझे राजस्थान की प्रसिद्ध लोक कलाकार डॉ. रूमा देवी का उदाहरण अत्यंत प्रेरक लगता है। उन्होंने विश्व के अनेक देशों की यात्राएँ अपने पारंपरिक राजस्थानी परिधान में कीं। उनकी कला, प्रतिभा और सेवा-भाव ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। यह इस बात का सुंदर प्रमाण है कि अपनी संस्कृति और वेशभूषा कभी भी सफलता की राह में बाधा नहीं बनती; बल्कि अनेक बार वही हमारी विशिष्ट पहचान बन जाती है।मेरा विश्वास है कि भारत की शक्ति उसकी विविधता, संस्कृति और पारस्परिक सम्मान में निहित है। हमें किसी भी विवाद या मतभेद को सामाजिक सौहार्द को आहत करने का माध्यम नहीं बनने देना चाहिए। अपनी परंपराओं का सम्मान करते हुए दूसरों की आस्थाओं का आदर करना ही भारतीय संस्कृति का सबसे सुंदर संदेश है।आज जब पीछे मुड़कर देखती हूँ तो अनुभव होता है कि बचपन में माता-पिता द्वारा बोए गए संस्कारों के बीज ही जीवन में सुख, संतोष और आत्मविश्वास का आधार बने। प्रतिभा तब और अधिक फलती-फूलती है, जब उसकी जड़ें संस्कारों की मिट्टी में गहराई तक जुड़ी हों।आइए, हम अपनी संस्कृति, अपने संस्कार और अपनी मानवीय संवेदनाओं को सहेजें। यही हमारी सबसे बड़ी धरोहर है और यही आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे मूल्यवान विरासत भी। **अमिता मराठे इंदौर मध्य-प्रदेश**

सराहनीय कदम

दवाओं ने 12 प्रतिशत से ज्यादा एथेल अल्कोहल वाली 30 मिली से बड़े पैक में बेचने वाली औषधीय दवाओं को जो छूट मिलती थी उसे खत्म कर दी अब ये उत्पाद ड्रग एंड कॉस्मेटिक एक्ट 1940 के तहत लाइसेंस लेकर ही बनाए बेचे जा सकते है इन दवाओं को एच, 1सूची में शामिल किया गया।अभी इलायची,अदरक और अन्य सुगंधित पदार्थों वाले कुछ टिंचर अबतक अनुसूची के तहत लाइसेंस से मुक्त थे इस छूट इस्तेमाल कर कुछ उत्पादों में80से90प्रतिशत तक अल्कोहल की मात्रा रखते थे।ऐसा उत्पादों को नशाखोर इस्तेमाल करते और नशाखोरी को बढ़ावा देते इसे लाइसेंस युक्त कर सराहनीय कदम किया।**मोहम्मद हुसैन हाटपीपल्या वाला इंदौर**

झारखंड का मिनी बाबा धाम : शिवगादी धाम

शिव गादी दर्शन

प्राकृतिक सौंदर्य से समृद्ध झारखंड का मिनी बाबा धाम, नाम है शिव गादी। सावन महीने में और शिव रात्रि के समय लाखों भक्तों और दर्शकों की उपस्थिति इस बाबा धाम की महत्ता और दर्शनीयता को साबित करती है।साहिबगंज जिले के बरहेट से मात्र छह किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है भगवान शंकर का यह मंदिर। राजमहल की पहाड़ियों की भौगोलिक तथा पौराणिक महत्ता की जानकारी आप सभी को जरूर होगी। इसी पहाड़ की एक चट्टानी गुफ़ा के अंदर है बाबा की पूजन बेदी। देखकर आश्चर्य होता है कि बाबा के लिंग पर सालों भर पहाड़ से बूँद बूँद पानी टपकता रहता है।शहर और आबादी से एक निर्जन जगह पर इस भव्य मंदिर का निर्माण कब किया गया था और किसने किया था,कोई भी बता नहीं सकता है।पहाड़ की चट्टान को काटकर गुफा बनाया गया है और इसी गुफा के अंदर बाबा भोलानाथ का पीतांबरी लिंग है। शिव गादी का पौराणिक महत्व भी है। मान्यता है कि महिषासुर के पुत्र गजासुर ने कठिन तपस्या कर शंकर भगवान को प्रसन्न कर उनके आशीर्वाद से काफी बलशाली हो गए थे। कालांतर में वे दुराचारी हो गए थे और लोगों में काफी भय व्याप्त हो गया था। लोगों की त्राहिमाम पुकार सुनकर शंकर भगवान ने नंदी पर सवार होकर गजासुर का वध कर दिया था। मृत्यु के समय गजासुर ने आशुतोष महादेव की स्तुति की थी। शंकर भगवान ने कहा था कि तुमने जो शिवलिंग स्थापित किया है वह तुम्हारे नाम से गाजेश्वर धाम के नाम से जाना जायेगा। शिव पुराण के अनुसार शिव गादी ही गाजेश्वर धाम है।.शिव गादी मंदिर में पहाड़ के ऊपर नंदी के दो पैरों के निशान हैं और इसमें सालों भर पानी रहता है।

गयासुर को वध करते वक्त नंदी अपने दो पैरों पर खड़ी हो गई थी और उनके पैरों के निशान पहाड़ पर आज भी अवस्थित हैं।

शिव गादी मंदिर के चट्टानी दीवार पर एक वट वृक्ष भी है जो अक्षयवट और कल्पतरु के नाम से जाने जाते हैं।

बरसों से इस मंदिर के पुजारी रहे हैं प्रसिद्ध राजनीतिक और प्रशासनिक अधिकारी स्वर्गीय रामेश्वर ठाकुर के वंशज।बरहेट बाजार के भक्तों और कुछ मारवाड़ी समाज के धनी व्यक्तियों के सहयोग से इस मंदिर के विकास और संरक्षण में काफी काम किया गया है। विधायकों,सांसदों तथा राज्य के मुख्यमंत्री ने भी इस मंदिर को सूबे के पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने हेतु यथोचित कदम उठाया है। मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन के विधायक प्रतिनिधि श्री पंकज मिश्रा ने मंदिर की प्रबंध समिति के सदस्यों से मिलकर बरहेट से लेकर मंदिर तक सड़क और रोशनी की सुव्यवस्था कर दी है।

मंदिर के निकट मेला स्थल पर कई धर्मशाला,सार्वजनिक स्नानागार, शौचालय, विश्रामस्थल भी हैं जिससे दूर दराज से आए पर्यटकों, भक्तों तथा खासकर महिलाओं को पर्याप्त सुविधा मिल रही है।

शिव गादी मंदिर पहाड़ पर अवस्थित है । सावन महीने में चतुर्दिक हरियाली ही हरियाली दिखती है। झरने के बहते पानी का अनुपम सौंदर्य देख कर लोगों का मुग्ध हो जाना स्वाभाविक है। पहाड़ की तलहटी पर मेला लगता है। टेंपों, बाइक और निजी गाड़ियों के लिए पार्किंग की पर्याप्त जगह उपलब्ध है।

पूजन सामग्री,फल,फूल,गंगा पानी तथा अन्य सामानों की दुकानें की उपलब्धता से दर्शकों को भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता है। चाय,शीतल पेय और नाश्ता की दुकानों की अच्छी संख्या देखने को मिलती है।मंदिर से निकटतम बाजार बरहेट है जो मात्र छह किलोमीटर की दूरी पर है। बरहेट से निकटतम रेलवे स्टेशन बरहरवा जंक्शन है। बरहरवा से बरहेट की दूरी मात्र बीस किलोमीटर है।टेंपों,टोटो,तथा टैक्सी से आने जाने की सुविधा है।कियाग भी बहुत ज्यादा नहीं है,सड़क अच्छी है। राजमहल,साहिबगंज और फरक्का गंगा घाट से भक्त लोग पानी लेकर पैदल चलकर शिव गादी मंदिर तक आने वाले कांवरियों की सेवा करने वाले लोग चौबीस घंटे यात्रा पथ पर लगे रहते हैं। दुमका से बरहेट की दूरी 100 किलोमीटर है। देवघर से 136 किलोमीटर तथा गोड्डा से मात्र 60 किलोमीटर की दूरी पर है बरहेट बाजार। साहिबगंज से बरहेट की दूरी 105 किलोमीटर है।

बहुत सारे भक्त देवघर में बाबा के दर्शन पूजन के बाद शिव गादी भी आते हैं।

साहिबगंज जिले में कई दर्शनीय स्थल हैं। महाराजपुर में मोती झरना,राजमहल में सिंघी दालान,गंगा नदी, कन्हैया स्थान,साहिबगंज में वायसी काली मंदिर,उत्तर वाहिनी गंगा नदी, बरहरवा में बिन्दुधाम, पंचकठिया में क्रांति स्थल और दो सौ पुराना बरगद का पेड़, सिदो कान्हू की जन्मस्थली भोगनाडीह, फूलो झानो पार्क आदि दर्शनीय स्थलों के दर्शन लोग कर ही सकते हैं क्योंकि ये सभी स्थल बरहेट से ज्यादा दूर नहीं हैं।दूर दराज से आने वाले पर्यटकों को फरक्का ब्रिज भी देखने की इच्छा हो ही सकती है। सड़क मार्ग से अथवा बरहरवा से ट्रेन से फरक्का जाना संभव है और दूरी भी ज्यादा नहीं है।शिव गादी धाम न सिर्फ आस्था का केंद्र है,बल्कि झारखंड के पर्यटन मानचित्र पर एक नई पहचान बन रहा है।

इस सावन के पवित्र महीने में आप शिव गादी धाम का दर्शन कर पुण्य- लाभ करें और राजमहल की पहाड़ियों की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद उठावें।

निर्मल कुमार दे जमशेदपुर

फोटो सौजन्य नवीन जी और मलिक अखूतर भाई

भूख हड़ताल : आज के दौर में प्रासंगिकता

एक समय था जब भूख हड़ताल सत्ता की अंतरात्मा को झकझोर देती थी। महात्मा गांधी के सत्याग्रह और उपवास ने ब्रिटिश शासन पर नैतिक दबाव बनाया, और बाद में भी कई आंदोलनों में इसका असर दिखा—जैसे पोट्टी श्रीरामुलु या अन्ना हज़ारे के अभियान। इन सबमें एक बात समान थी—मजबूत जनसमर्थन और स्पष्ट नैतिक आधार।

लेकिन आज परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। अब केवल त्याग या प्रतीकात्मक विरोध पर्याप्त नहीं है। यदि जनता आपके साथ नहीं है, तो भूख हड़ताल महज़ एक खबर बनकर रह जाती है। आधुनिक लोकतंत्र में सरकारें जनमत, चुनावी समीकरण और संस्थागत दबावों से प्रभावित होती हैं, न कि केवल नैतिक अपील से।

आज किसी भी आंदोलन की असली ताकत जनसमर्थन और प्रभावी संवाद में है। सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और तथ्य-आधारित तर्क लोगों की राय बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। साथ ही, कानूनी और संस्थागत रास्ते—जैसे जनहित याचिकाएँ और सूचना का अधिकार—भी बदलाव लाने के प्रभावी साधन बन चुके हैं।

कॉंक्रीच आंदोलन को ही ले लीजिए। सोशल मीडिया पर फॉलोअर्स होना और साथ में खड़े होना एक विशाल जनसमूह के साथ दोनो अलग बातें है। जितने साथ में है उतने ही विरोध में। आंदोलन की दिशा भी कई बार भटक जाती है। इसे व्यापक रूप में एक नही कई मुद्दों के साथ उतरना था। युवाओं के मुद्दे एक नही अनेक है पर शुरुआत ही दिशाहीन थी। बहुत जल्दी की गई। व्यापक जनसमर्थन तैयार नही किया गया जिसके कारण इसकी सफलता संदिग्ध हो गई। आंदोलन गलत नही पर रणनीति के साथ नही चालू किया गया। फिर हिंदुस्तान में लकीर पीटना आम बात है। बात पहले के अन्ना आंदोलन के केजरीवाल पर आ गई। क्योंकि अब जनता सिर्फ पुराने उदाहरण तो ऐसे देने लगी जैसे अब वही होगा जो पहले हुआ था। तो क्या ऐसी परिस्थिति में कोई सही बातों के लिए आंदोलन ही न करे? कल को क्या होगा उसका अभी से निर्णय दे रहे है लोग। लेकिन आज तो सही है ना। कल जो होगा उससे कल निपटेंगे। भविष्य पर किसका जोर चला है जो आज के सही को भी सिर्फ सम्भावनाओ के आधार पर गलत करार दे दिया जाय।

इसलिये सही रणनीति यही होना था कि जनमानस की नब्ज पकड़कर पहले उसका निराकरण कर जनता का विश्वास जीतना चाहिए था। ताकि कल विरोध के स्वर कम उठे। इसलिए, बिना व्यापक समर्थन और स्पष्ट संवाद के भूख हड़ताल करना रणनीतिक रूप से कमजोर कदम हो सकता है। पहले लोगों तक अपनी बात पहुँचाना, उनका विश्वास जीतना और ठोस तर्क प्रस्तुत करना जरूरी है।लोकतंत्र में वही आंदोलन सफल होता है, जो पहले जनता का विश्वास जीतता है और फिर सरकार के समक्ष अपनी बात रखता है।

डॉ. संजय बिन्दल

आस्था पर डाका : अयोध्या की अग्निपरीक्षा और योगी सरकार की कसौटी

अयोध्या केवल एक शहर नहीं है। यह करोड़ों हिंदुओं की आस्था, विश्वास और आत्मा का केंद्र है। श्रीरामलला के चरणों में श्रद्धालु जो चढ़ावा चढ़ाते हैं, वह केवल धन नहीं होता; उसमें उनकी मेहनत, विश्वास, मनोकामनाएँ और भगवान के प्रति समर्पण निहित होता है। यदि उसी चढ़ावे पर किसी ने हाथ डाला है, तो यह केवल चोरी नहीं, बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था पर डाका है।जांच एजेंसियों के अनुसार जो तथ्य सामने आ रहे हैं, वे अत्यंत गंभीर हैं।जिसके बल पर राम मंदिर का निर्माण हुआ।अब यह केवल चोरी का मामला नहीं रह गया है। यदि जांच निष्पक्ष होगी, दोषियों को कानून के अनुसार कठोर दंड मिलेगा और किसी प्रभावशाली व्यक्ति को संरक्षण नहीं मिलेगा, तभी श्रद्धालुओं का विश्वास बना रहेगा।राम मंदिर केवल पत्थरों का भव्य निर्माण नहीं, बल्कि आस्था का मंदिर है। यदि आस्था पर लगा यह दाग समय रहते नहीं मिटाया गया, तो उसका असर करोड़ों श्रद्धालुओं के विश्वास पर पड़ेगा। इसलिए दोषी चाहे कोई भी हो, कानून के सामने सब समान होने चाहिए।रामराज्य का अर्थ केवल मंदिर बनाना नहीं, बल्कि न्याय, पारदर्शिता और जवाबदेही स्थापित करना भी है। आज अयोध्या की धरती यही पुकार रही है—सत्य सामने आए, निर्दोष सुरक्षित रहें और दोषियों को ऐसा दंड मिले कि भविष्य में कोई भी श्रद्धालुओं की आस्था के साथ खिलवाड़ करने का साहस न कर सके। यही इस प्रकरण की सबसे बड़ी सीख और सबसे बड़ी आवश्यकता है।

डा.अजय शुक्ला

घरेलू प्रदर्शन बने चयन का आधार

आयरलैंड जैसी टीम से 2-0 की शिकस्त और उसके बाद इंग्लैंड के खिलाफ पांच टी-20 मैचों की सीरीज के 5 मैचों में 4-0 से पिछड़ जाना बेहद चिंताजनक है। यह प्रदर्शन हमारी राष्ट्रीय टीम की मौजूदा स्थिति का कड़वा सच बयां करता है।आज की भारतीय टीम में ऐसे कई खिलाड़ी शामिल हैं जो इंडियन प्रीमियर लीग की चमक-दमक और भारत की सपाट पिचों पर तो रनों का अंबार लगा देते हैं, लेकिन विदेशी और चुनौतीपूर्ण पिचों पर आते ही पूरी तरह बेअसर साबित होते हैं। संजू सैमसन,वैभव सूर्यवंशी ,तिलक वर्मा ईशान किशन मुख्य बल्लेबाज है जो गेंदबाज यहां आई पी एल में मैच विजेता बने थे वे अब मैच हराने वाले बन चुके है । जिनमें प्रसिद्ध कृष्णा ,प्रिंस यादव ,रवि बिश्नोई ,वरुण चक्रवर्ती है इनकी गेंदों की धार सिर्फ आई पी एल में दिखती है, जो गंभीरता होनी चाहिए, वह आई पी एल खेल खेल कर कहीं खोती नजर आ रही है। राष्ट्रीय टीम में चयन का पैमाना सिर्फ आईपीएल की चार ओवरों की गेंदबाजी की चमक या फिर धुआंधार बल्लेबाजी नहीं हो कर तकनीकी रूप से सक्षमता होनी चाहिए। रणजी ट्रॉफी, विजय हजारे ट्रॉफी और सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी जैसे देश के पारंपरिक घरेलू टूर्नामेंटों में निरंतर अच्छा प्रदर्शन करने वाले गंभीर खिलाड़ियों को मौका दिया जाना चाहिए।**भगवानदास छारिया 15 सोमानी नगर इंदौर**

स्टेटस जीवन का आईना

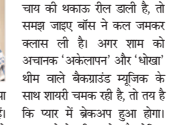

आजकल सोशल मीडिया स्टेटस जीवन का आईना बन गए हैं। बस एक स्क्रोल मारो और सामने वाले की पूरी डायरी, दिल की गाँठें, ब्रेकअप की चीखें और प्रमोशन की खुशी सब कुछ खुला हुआ नजर आ जाएगा। कोई सीधे मुंह पर कुछ बोलने की हिम्मत नहीं रखता, लेकिन स्टेटस लगाने में पूरा शायर बन जाता है। वह जमाना गया जब लोग अपनी भावनाएं डायरी में लिखते थे या किसी दोस्त से शेयर करते थे। अब तो नियम साफ है 'दिल में है गम, तो स्टेटस लगाएंगे हम।' अगर सुबह-सुबह किसी ने चाय की थकाऊ रील डाली है, तो समझ जाइए बॉस ने कल जमकर क्लास ली है। अगर शाम को अचानक 'अकेलापन' और 'धोखा' थीम वाले बैकग्राउंड म्यूजिक के साथ शायरी चमक रही है, तो तय है कि प्यार में ब्रेकअप हुआ होगा। जुबान तो बेचारी खामोश है, लेकिन स्टेटस चिल्ला-चिल्लाकर पूरी कॉन्टैक्ट लिस्ट को अपनी दुखभरी दास्तान सुना रहा है।स्टेटस लगाने वाले भाई, तुम तो महान मनोवैज्ञानिक निकले। तुम्हें पता है न कि ये स्टेटस पढ़कर कौन जल रहा है? क्योंकि तुम जानते हो कि वो पढ़ेगा। ये पूरा खेल 'मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन तुम समझ गए न' वाला है।आज कल तो धार्मिक यात्राएं भी सोशल स्टेटस के लिए होने लगी है जब किसी पहचान वाले या पड़ोसी का स्टेटस देखा हम चले केदारनाथ दर्शन को या चलो बुलवा आया है माता ने बुलाया है। बस सब चल पड़े भेड़ चाल एक के पीछे एक मंदिर जाकर एक से एक स्टाइल में फोटो खिंचवा कर स्टेटस पर लगा कर दिखाया जाता है।अब तो हालत ये हो गई है कि लोग स्टेटस देखने से भी डरने लगे हैं। स्क्रोल करते वक्त उंगली थथरराने लगती है कहीं किसी का स्टेटस मुझ पर फिट न हो जाए। 'कर्मों का हिसाब बराबर होगा' वाला स्टेटस आ गया तो दिल दहल जाता है। क्यूंकि जिंदगी में गलती तो हर किसी ने की होती है और किसी ने खुशी का इजहार कर दिया तो जलन के मारे रात भर नींद नहीं आती। पहले लोग अपनी गलतियों से सीखते थे, अब स्टेटस से डरते हैं। सबसे मजेदार बात ये है कि जो लोग सबसे ज्यादा स्टेटस लगाते हैं, वे खुद सबसे ज्यादा दूसरों के स्टेटस चेक करते हैं। फिर स्क्रीनशॉट लेकर ग्रुप में शेयर करते हैं 'देखा इसकी हालत? '। यानी स्टेटस न सिर्फ अपना दर्द व्यक्त करने का साधन है, बल्कि दूसरों का दर्द एंजॉय करने का मुफ्त का सिनेमा भी है।तो भाई-बहनो, अगली बार स्टेटस लगाने से पहले सोच लेना। क्योंकि वो 'छद्रद्ध' वाला स्टेटस, जो तुमने रात के दो बजे 'मूड' में लगाया था, किसी का पूरा दिन खराब कर सकता है। या फिर किसी को इतना अच्छा लग सकता है कि वो तुम्हें मैसेज कर दे 'भाई, तू भी वही झेल रहा है क्या?' और हाँ, अगर तुम स्टेटस नहीं लगाते, तो समझ लो तुम या तो समझदार हो, या बहुत ज्यादा ही चालाक। दोनों ही हालत में, बधाई हो।

वीरेंद्र हीरालाल पथरिया श्री लक्ष्मी नगर इंदौर

हैरान है बदरा

तिरछी नज़र

बदरा हैरान और परेशान है। क्या चाहते हैं इस देश के नागरिक वह समझ नहीं पा रहा है। जेठ की दुपहरी में उसकी अनुपस्थिति का लोग बुरा मान रहे थे। कुछ दिनों तक वह प्रतीक्षा करता रहा। पर उनकी भावना को देखते हुए वह आसमान में छा गया। पर लोग खुश नहीं हुए। उनका रोना था कि इतनी गरमी है अतः सिर्फ आसमान में छाने से, उमड़ने-घुमड़ने से कुछ नहीं होने वाला। पानी बरसना जरूरी है, तभी राहत मिलेगी। बादल को जनता को परेशान देख कर दया आ गई। उसने हल्की बारिश कर दी ताकि लोग प्रसन्नता का अनुभव कर सकें। लोग फिर भी उससे नाराज ही रहे। 'इतनी बारिश से क्या होगा? यह तो गरम तवे पर पानी की छींटे के समान है।' जैसे उद्गार सुनने में आया। उसे लगा कि लोगों का यह कहना भी ठीक है। इतनी गरमी में जितना पानी उसने बरसाया है वह पर्याप्त नहीं है। अतः जम कर बरस गया। उसे लगा अब इनसान नामक प्राणी खुश हो जाएगा। पर नहीं। इनसान को इससे भी तकलीफ ही हुई। 'सड़कें बनी दरिया, कचरे का पहाड़ ढहा,' जैसे सुर्खियों से पुरा समाचार पत्र पट गया। टीवी चैनलों को जलमग्न दृश्यों के अलावा कोई दृश्य नहीं भा रहा था। वैसे प्रत्यक्षतः तो उसे कोई दोष नहीं दे रहा था पर दुखी तो थे ही लोग वर्षा से। 'ना बरसो तो इन्हें परेशानी होती है बरसो तो इनका जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है,' मन ही मन यह सोचते हुए कि आज बरसूंगा नहीं, सिर्फ घूम-घूम कर देखूंगा कि क्या हालात हैं, बदरा निकल पड़ा सैर पर। दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, गुरुग्राम सभी जगह सड़कें नहरों में तब्दील हो गई थी। पानी को तो नालों से होकर निकलना था फिर यह सड़कों पर क्या कर रहा है। थोड़ा गौर से देखने पर पता चला कि 'नो प्लास्टिक' की रट लगाने वाले देश में सभी नाले प्लास्टिक से अटे पड़े थे। कहीं-कहीं रोड नालों से नीचे थीं। उसे याद आया पिछले वर्ष भी ऐसा ही हुआ था। सरकार तैयारी का ऐलान करती है और विरोधी पोल खुलने का ढ़ोल पीटते हैं। और ऐसा तब भी होता है जब सरकार और विपक्षी पाला बदल लेते हैं। मनुष्यों का कुछ नहीं हो सकता। इनका रोना ऐसे ही जारी रहेगा चाहे बरसो या मत बरसो।

विनय कुमार पाठक, जयपुर
9001895412

त्वरित टिप्पणी

पश्चिम बंगाल में नेताजी सुभाष चंद्र बोस को कमतर आँकने और उनको गुंडा दल के लीडर कहने का दुस्साहस नई सरकार ने दिखाया है। भाजपा नेता शमिक भट्टाचार्य की जितनी भी भर्त्सना की जाए,कम होगी।

निर्मल कुमार दे जमशेदपुर